आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 09-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को सारी सृष्टि चक्र के ड्रामा का एक्यूरेट ज्ञान देकर सभी प्रश्नों से उपराम बनाने वाले ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप का पार्ट एक्यूरेट है, वह अपने समय पर ही आते है, जरा भी फ़र्क नहीं पड़ सकता, उनके आने का यादगार शिवरात्रि खूब धूमधाम से मनाओ.

हमारे भारत का लास्ट हजार वर्ष का इतिहास देखे तो मालूम पड़ेगा कि हमारे भारत में रहने वाले भारतीयों ने बहुत कष्ट उठायें है, बहुत दुख जेलें हैं. लास्ट हजार साल कि भारत कि हिस्ट्री में ६०० साल से भी ज्यादा मोगलों ने और बाद में २०० साल से भी ज्यादा अंग्रेजों ने राज किया हैं. बाबा बताते है कि सबसे पहले मोहमंद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर को लुटा, वह भी एक बार नहीं लेकिन १७ बार लुटा!!! तो बहुत ब्राह्मण बच्चों को यह प्रश्न स्वाभाविक रुप से उठता है कि जिसकी हमने सबसे ज्यादा भक्ति कि, सबसे पहले मंदिर बनाकर पूजा भी सबसे पहले चालू कि वह परमात्मा शिव जब भारत पर इतने कष्ट थे, भारतीय इतने दुखी थे तब वह कहा थे? उस समय शिवबाबा हमको दुखों से छुड़वाने क्यों नहीं आये? यही क्यों-क्या के प्रश्नों के उत्तर देते हुए शिवबाबा ने कहा, बाप का पार्ट एक्यूरेट है वह अपने समय पर ही आते है जरा भी फ़र्क नहीं पड़ सकता. जब कलियुग के अन्त में भारत बहुत ही कंगाल और दुखी हो जाता है तब ही बाप आते है और इसी भारत को कलियुग से सतयुग में बदलते हैं और भारत में ही एक आदि सनातन दैवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं.

बाबा ने हमें यह भी बताया है कि वह भी ड्रामा से बंधायमान है तो यह प्रश्न की बाप आ गया फिर भी भारत इतना दुखी-कंगाल क्यों है? सतयुग कहा आया है? तो बाबा ने बताया है कि यह संगमयुग 100 वर्ष का है उसके बाद ही भारत और सारे विश्व पर सतयुग की स्थापना होती हैं.

आज बाबा ने हमें एक और ड्रामा का राज (razz) बताते हुए समझाया कि परमपिता-परमात्मा का पार्ट इस ड्रामा के अन्त में ही आता है उसमें फेर-बदल नहीं हो सकता. बाबा भी इस ड्रामा से बंधायमान है.

बाबा की अन्य मुरलीओं से लिए गये, इस बेहद के ड्रामा के अन्य राज (razz), जिसको याद में रखने से हमें अपना पार्ट श्रेष्ठ बनाने में मदद मिलेगी.

- यह ड्रामा बड़ा एक्युरेंट हैं या कहे यह ड्रामा मेरे लिए बहुत-बहुत कल्याणकारी हैं. – बाबा ने कहा है कि हम भाग्यशाली आत्मा ये कल्प के सारे सृष्टि चक्र में तीन-चौथाई हिस्सा (3/4 part), सतयुग-त्रेतायुग-द्वापर ऐसे तीन युग बहुत सुखी रहते हो. ये पाईन्ट हमें बेहद की खुशी देता है और बेफिक्र भी बनाता हैं.

- ड्रामा हर 5000 वर्ष रिपिट होता हैं. ---> ये पाईन्ट हमें सिखाता हैं, अभी जो कर्म करेंगे, वही कर्म ड्रामा के अगले साइकिल में भी करेंगे, तो अब हमें अपना हर कर्म श्रेष्ठ करना ही हैं. बाकी रहा हुआ ड्रामा में हमारा कोई भी पार्ट चले, दुखी नहीं होना हैं.

- इस बेहद के ड्रामा में सब आत्मा ये नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं. ड्रामा में पार्टधारी आत्माओं के नम्बर में फर्क नहीं हो सकता. -- ये पाईन्ट हमें क्यू-क्या के प्रश्नों से उपराम कर देता हैं.

- ड्रामा टिक-टिक जुई मिसिल चलता हैं. -- यह पाईन्ट हमें इस त्याग, तपस्या और वैराग्यता के मार्ग पर चलते धैर्यता सिखाता हैं.

- ड्रामा हर सेकंड चेईन्ज होता हैं. -- यह पाईन्ट हमें साक्षी हो कर ड्रामा को देखना सिखाता हैं. अचानक के समय पर ये पाईन्ट हमें अचल-अडोल रहना सिखाता हैं.

- ड्रामा अंतिम चरण में हैं. यह पुरानी दुनिया अब विनाश होनी है, अब हम अपने बाबा के पास जाते है फिर सतयुग में आयेंगे. -- यह पाईन्ट हमारी बुद्धि को उपराम बना देता है, बेहद का वैराग्य सिखाता हैं. पुरानी दुनिया से नाता तोड़ नयी दुनिया से जोड देता हे. यह पाईन्ट हमारी स्थिति भी एवर-रेडी (सदा-तैयार) बनाता हैं.

- ड्रामा में हर एक आत्मा का अपना-अपना अनादि पार्ट हैं. - यह पॉइन्ट हमें दूसरों का पार्ट देखकर हमारी अवस्था को चलायमान नहीं होने देगा.

- ड्रामा में परमात्मा का पार्ट कलियुग के अन्त में, संगमयुग पर ही शुरु होता है, उसमें फेर-बदल नहीं हो सकता और बाबा भी इस ड्रामा से बंधायमान है. - यह पॉइन्ट हमें क्यू-क्या के प्रश्नों से उपराम करता हैं. व्यर्थ संकल्पों से मुक्त करता हैं.

ॐ शांति.